चेम्बूर 19/5/64 :– तुम बच्चे हमेशा बाप का परिचय देते रहो। बाप स्वर्ग का रचता है तो बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए न! आखरीन में प्रभाव निकलता जाएगा, उठते रहेंगे। समझाया जाएगा, देरी से आए हो तो अब गैलप करो। बहुत जोर से पुरुषार्थ करना पड़ेगा। बहुत गई, थोड़ी रही। समय तो लगता है न! कितना योग में रहते हैं तो भी कुछ न कुछ होता रहता। ढेर बच्चे हैं, ज़रूर अच्छे फ्लावर्स को एकदम छाती से जड़ देंगे। कपूत को थोड़े ही छाती से जड़ेंगे। कहते, यह तो मुआ भला, बहुतों को नुकसान कर देते। तुम्हारा पढ़ाई का कनेक्शन शिवबाबा से। मम्मा–बाबा से अनबन हो जाए; परन्तु पढ़ाई को तो न छोड़ो। अच्छा, घर बैठे शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा कहते, मेरे से तो (न) बिगड़ो, मेरी तो मत मानो। मेरी सजनी बनी हो तो मेरे से बुद्धियोग लगाओ न! फिर भी मानते ही नहीं। ॐ